

भारत सरकार  
जल शक्ति मंत्रालय  
जल संसाधन नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग  
केंद्रीय जल आयोग  
जल प्रणाली अभियांत्रिकी निदेशालय



Government of India  
Ministry of Jal Shakti  
Dept. of Water Resources, RD&GR  
Central Water Commission  
Water System Engineering Directorate

**विषय: समाचार पत्रों की कटिंग का प्रस्तुतीकरण-01-अक्टूबर-2020**

जल संसाधन विकास एवं सम्बद्ध विषयों से संबन्धित समाचार पत्रों की कटिंग को केंद्रीय जल आयोग के अध्यक्ष के अवलोकन के लिए संलग्न किया गया है. इसकी साफ्ट कापी केंद्रीय जल आयोग की वेबसाइट पर भी अपलोड की जाएगी.

**संलग्नक: उपरोक्त**

**(-/sd)**

**सहायक निदेशक**

**उप निदेशक(-/sd)**

**निदेशक (-/sd)**

**सेवा में**

अध्यक्ष, केंद्रीय जल आयोग, नई दिल्ली

**जानकारी हेतु:** सभी संबन्धित केंद्रीय जल आयोग की वेबसाइट <http://cwc.gov.in/news-clipping> पर देखें



The Hans 01-October-2020

# Rains, flood damage crops in 1,17,391 hectare in AP

- According to preliminary estimates, paddy crop has been damaged in 58,400 hectare, cotton in 24,071 hectare across the State
- Maximum loss of paddy is West Godavari, in an extent of 14,796 hectare

## HANS NEWS SERVICE

**Guntur:** Heavy rains and floods damaged various crops in 1,17,391 hectare in the state in September, according to preliminary crop damage assessment. Paddy, cotton, groundnut, maize, red gram and black gram crops suffered extensive damage. According to sources in the agriculture commissioner's office here, paddy was damaged in 58,400 hectare in the state. Maximum crop loss is in West Godavari in an extent of 14,796 hectare followed by 14,566 hectare in Kurnool, 14,560 hectare in East Godavari and 5,027 hectare in Kadapa. The damage is insignificant in other districts.

Similarly, cotton crop was damaged in 24,071 hectare, with maximum extent of 6,621 hectare in



Flood water inundated cotton gardens in Amaravati mandal of Guntur district

Kurnool, followed by 6,555 hectare in Guntur district, 6,304 hectare in Prakasam and 3,040 hectare in Kadapa. Maize crop was damaged in an area of 12,771 hectare across the state. The maximum damage was in Kurnool where the crop in 12,104 hectare was affected and Prakasam district suffered crop loss in 537 hectare.

The damage to groundnut crop has been reported in 6,718 hectare, of which the maximum extent of 4,174 hectare in Anantapur district. Black gram crop was damaged in a total of 3,833 hectare. Of this, 1,391 hectare is in Kurnool district. Similarly, red gram suf-

fered damage in 3,590 hectare, the highest extent of 2,156 hectare being in Prakasam followed by 1,119 hectare in Kurnool district. Chillies, ragi, sugarcane, sunflower, jowar, korra bajra, castor, soybean and green gram crops were also damaged but not significantly. The revenue and agriculture department officials will conduct final enumeration to assess the crop loss and display the details in the Rythu Bharosa Kendras inviting objections from the farmers. The district collectors will send the report on crop damages by October 15 to the government to facilitate payment of compensation.

The Pioneer 01-October-2020

## 20 फीसदी कम बरसकर दिल्ली से चला गया मानसून राजधानी में पूरे सीजन के दौरान 648.9 मिमी के मुकाबले दर्ज की गई 576.5 मिमी वर्षा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

बीस फीसदी कम बरसकर दिल्ली से चला गया मानसून। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने यह देते हुए बताया कि सामान्य से दो दिन पहले 25 जून को राष्ट्रीय राजधानी में पहुंच गया था और सामान्य से पांच दिन अधिक रहा। यह 25 सितम्बर तक राजधानी से वापसी कर जाता है।

मौसम विभाग के क्षेत्रीय पूर्वानुमान केंद्र के प्रमुख कुलदीप श्रीवास्तव ने बताया उत्तर-पश्चिम हवा के निम्न स्तर में बदलाव, नमी की मात्रा में कमी, बारिश नहीं होने से ऐसे संकेत हैं कि दक्षिण पश्चिम मानसून राजस्थान के और कुछ भागों, पंजाब के शेष हिस्सों, पूरे पश्चिमी



हिमालई क्षेत्र, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली और उत्तर प्रदेश के कुछ भागों से वापसी कर गया है।

विभाग के आंकड़े के अनुसार मानसून के इस मौसम में दिल्ली में 20 प्रतिशत कम बारिश दर्ज की गई है। दिल्ली जैसे छोटे क्षेत्रों के लिए, लंबी अवधि की औसत वर्षा (50 वर्ष) की तुलना में 19 प्रतिशत अधिक या कम सामान्य माना जाती है। सफ़रजंग वेधशाला ने पूरे सीजन के दौरान 648.9 मिमी के सामान्य के

### जारी है वायु गुणवत्ता में गिरावट का सिलसिला

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी में वायु गुणवत्ता में गिरावट का सिलसिला जारी है। इसके शुक्रवार तक खराब श्रेणी में पहुंचने का अनुमान लगाया है। दिल्ली ने बुधवार को सुबह साढ़े 10 बजे वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 160 दर्ज किया गया। सिस्टम ऑफ एयर क्वालिटी एंड वेदर फोरकास्टिंग एंड रिसर्च (सफर) ने कहा कि हवा के प्रवाह की अनुकूल स्थिति को देखते हुए बृहस्पतिवार तक दिल्ली में एक्यूआई के मध्यम श्रेणी में रहने की संभावना है। मानसून की देर से वापसी और संबंधित स्थिर हवाएं सप्ताह के अंत तक दिल्ली की वायु गुणवत्ता को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है। दो अक्टूबर तक वायु गुणवत्ता के खराब श्रेणी में पहुंचने का अनुमान है। भारत मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार मानसून ने सोमवार को राजस्थान से लौटना शुरू किया था। बृहस्पतिवार तक पूरे उत्तर-पश्चिम भारत से इसके लौटने की संभावना है।

मुकाबले 576.5 मिमी वर्षा दर्ज की जो 11 प्रतिशत कम है। मौसम विभाग ने इस साल की शुरुआत में दिल्ली से

मानसून की वापसी की तिथि को संशोधित करते हुए 21 सितम्बर से 25 सितम्बर कर दिया था।

## भू-गर्भ जल को प्रदूषित करने वालों के खिलाफ करें कठोर कार्रवाई

● गंगा-यमुना को अविरल व निर्मल बनाए रखने के लिए चलेगा संयुक्त महाभियान: महेन्द्र सिंह

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश के जलशक्ति मंत्री डा. महेन्द्र सिंह ने प्रदेश की नदियों में बढ़ते प्रदूषण पर गंभीर चिन्ता व्यक्त करते हुए नमामि गंगे, आवास विकास, नगर विकास तथा पंचायतीराज, ग्राम्य विकास विभाग के साथ संयुक्त महा अभियान चलाने के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही उन्होंने उग्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारियों से कहा है कि नदियों को प्रदूषणमुक्त बनाने के लिए तैयार की गई कार्ययोजना में भूगर्भ जल को प्रदूषित होने से बचाने की योजना को भी शामिल किया



जाय। उन्होंने कहा कि भूगर्भ जल स्रोतों को प्रदूषित करने वाले इकाइयों तथा लोगों के खिलाफ कठोर से कठोर कार्रवाई की जाए क्योंकि यह मानवता के विरुद्ध अपराध है।

जलशक्ति मंत्री बुधवार को माल एवेन्यू स्थित जल निगम के ट्रांजिट हास्टल में उग्र प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड तथा नमामि गंगे व ग्रामीण जलापूर्ति विभाग के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री की अपेक्षा है कि वर्ष 2024 में आयोजित होने वाले कुम्भ मेलों को भव्य एवं दिव्य बनाने के लिए गंगा को अविरल तथा निर्मल बनाए रखने के लिए हरसंभव तैयारी

अभी से शुरू कर दी जाए। उन्होंने कहा कि नदियों को जीवित रखने के लिए प्रवाह जरूरी है तथा अविरलता से ही निर्मलता प्राप्त होगी। डा. सिंह ने कहा कि गंगा व यमुना जैसी पवित्र नदियों में तमाम नाले एवं अन्य जल स्रोत मिलते हैं। गंगा जी की निर्मलता बनाए रखने के लिए इसमें गिरने वाले प्रदूषण को पूरी तरह से रोका जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि नदियों के किनारे विभिन्न प्रकार की निर्माण इकाइयां संचालित की जा रही हैं। इनका प्रदूषित जल पाइप के माध्यम से नदियों में गिराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस तरह की इकाइयों का पता लगाकर प्रदूषित जल को बिना शोधित किये नदियों में गिरने से रोकने के उपाय किये जाएं। जलशक्ति मंत्री ने कहा कि ग्राम पंचायतों को ओडीएफएस कर दिया गया है और नाले के माध्यम से उसका दूषित जल भी जल स्रोतों में शामिल हो रहा है।



The Pioneer 01-October-2020

# देश में चार महीने के मानसून के दौरान सामान्य से ज्यादा बारिश हुई

भाषा। नई दिल्ली

मौसम विभाग ने बुधवार को बताया कि देश में चार महीने के बारिश के मौसम के दौरान सामान्य से ज्यादा बारिश हुई। देश में तीन महीने जून (107 प्रतिशत), अगस्त (127 प्रतिशत) और सितंबर (105 प्रतिशत) बारिश हुई जबकि जुलाई (90 प्रतिशत) में औसत से कम बारिश हुई।

राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केंद्र (एनडब्ल्यूएफसी) के वैज्ञानिक आर के जेनामणि ने बताया, 1961-2010 के आंकड़ों के आधार पर औसतन 87.7 सेंटीमीटर बारिश की तुलना में इस साल एक जून से 30 सितंबर के दौरान 95.4 सेंटीमीटर बारिश हुई। देश में मानसून की अवधि एक जून से शुरू होकर 30 सितंबर तक होती है। दक्षिण-पश्चिम मानसून देश की वार्षिक वर्षा में 70 प्रतिशत योगदान देता है। यह कृषि क्षेत्र के लिए काफी मायने रखता है। कृषि मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक अच्छी बारिश से खरीफ फसल की बुआई को बढ़ावा मिला और किसानों ने पिछले सप्ताह तक 1,116.88 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बुआई की जबकि पिछले साल इसी

## ● जेनामणि ने

बताया, 1961-2010 के आंकड़ों के आधार

पर औसतन 87.7

सेंटीमीटर बारिश की

तुलना में इस साल

एक जून से 30 सितंबर

के दौरान 95.4

सेंटीमीटर बारिश हुई

अवधि में 1,066.06 हेक्टेयर क्षेत्र में बुआई हुई थी। क्षेत्र के हिसाब से मौसम विभाग के चार प्रभाग हैं। चार प्रभाग में पूर्वी और उत्तर पूर्वी भारत, मध्य भारत और दक्षिण भारत में औसत से ज्यादा बारिश हुई। उत्तरपश्चिम भारत प्रभाग में कम बारिश दर्ज की गई। इस साल 19 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में सामान्य बारिश हुई जबकि नौ राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में ज्यादा बारिश हुई। बिहार, गुजरात, मेघालय, गोवा, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना,

तमिलनाडु, कर्नाटक और लक्षद्वीप में सामान्य से अधिक बारिश हुई। सिक्किम में अतिवृष्टि हुई। हालांकि नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर में कम बारिश हुई। लद्दाख में सामान्य से बहुत कम बारिश हुई। जेनामणि ने कहा, 1990 के बाद हालिया वर्षों पर विचार करने पर 1994 और 2019 में 110 प्रतिशत बारिश हुई।

लगातार दो मानसून वर्ष में चार महीने के दौरान देश में औसत से नौ प्रतिशत अधिक बारिश हुई। उन्होंने कहा, आंकड़ों से पता चलता है कि 1958 और 1959 में लगातार दो साल अच्छा मानसून रहा था जब क्रमशः 10 प्रतिशत और चार प्रतिशत अधिक बारिश हुई। मानसून ने एक जून को केरल में दस्तक दी थी। चक्रवात निसर्ग से भी इसे आगे बढ़ने में मदद मिली। मानसून 26 जून तक पूरे देश में पहुंच गया। आम तौर पर आठ जुलाई तक मानसून पूरे देश में फैल जाता है। मानसून की देर से विदाई भी हुई। पश्चिम राजस्थान और पंजाब के कुछ हिस्सों से सामान्य तारीख की तुलना में 11 दिन बाद यानि 28 सितंबर को वापसी हुई।

Asian Age 01-October-2020

## Monsoon withdraws with 20% less rain

**New Delhi:** The monsoon withdrew from Delhi on Wednesday, with the city recording 20 per cent less rainfall this season, the India Meteorological Department said. The wind system had reached the national capital on June 25, two days earlier than normal, and stayed five days longer than usual.

Normally, it withdraws from the city by September 25, Kuldeep Srivastava, the head of the regional forecasting center of the IMD, said.

According to MeT department data, the city recorded 20 per cent less rainfall this monsoon season. For smaller areas like Delhi, 19 per cent more or less than long-period average rainfall (50 years) is considered "normal".

Telangana Today 01-October-2020

Telangana Today

# TS records highest rainfall in 30 years

It is largely being attributed to increased green cover in State

STATE BUREAU  
Hyderabad

As the southwest monsoon began retreating from parts of north India, Telangana recorded the highest Southwest Monsoon rainfall over the last three decades. The State received 1,102 mm rainfall as on Wednesday which is 45 per cent more than normal rainfall of 759.6 mm during this year's monsoon, commencing from June 1.

The second highest rainfall of 912.2 mm during the southwest monsoon season was recorded in 2016-17. Over the last one decade

since 2009, the Southwest Monsoon rainfall in the State has been above normal for six times — in 2010, 2012, 2013, 2016, 2019 and this year. The State received six per cent above normal rainfall last year and two per cent below normal in 2018.

Warangal Urban district received 130 per cent excess rainfall, followed by Wanaparthy with 126 per cent and Mahabubabad with 106 per cent excess rainfall. Nirmal is the only district to have received 10 per cent less than normal rainfall.

Apart from climatic changes, the increased rainfall is largely being attrib-

uted to an increased green cover in the State. Due to novel schemes such as Haritha Haaram by Chief Minister K Chandrashekhara Rao, the green cover is estimated to have increased by around 5-6 per cent since the State formation. As per the biannual forest survey conducted by Forests Survey of India, the forest cover in Telangana has increased by 3.7 per cent from 49.05 lakh acres in 2014-15 to 40.84 lakh acres in 2019. The State government has planted over 207 crore saplings under Haritha Haaram programme inside and outside forests since its launch.



The State received six per cent above normal rainfall last year and two per cent below normal in 2018.



Millennium Post 01-October-2020

# Monsoon retreats from Capital

## OUR CORRESPONDENT

**NEW DELHI:** The monsoon withdrew from Delhi on Wednesday, with the city recording 20 per cent less rainfall this season, the India Meteorological Department (IMD) said.

The city recorded 467.7 mm rainfall against the normal of 585.8 mm between June 1 and September 30, it said.

The wind system had reached the national capital on June 25, two days earlier than normal, and stayed five days longer than usual. Normally, it withdraws from the city by September 25, Kuldeep Srivastava, the head of the regional forecasting centre of the IMD, said.

"Change in the low-level wind pattern to north-west-erlies, reduction in moisture content and cessation of rainfall indicates that the southwest monsoon has further withdrawn from some more parts of Rajasthan, remaining parts of Punjab, entire western Himalayan region, Haryana, Chandi-



garh, Delhi and some parts of Uttar Pradesh," the IMD said.

According to Met department data, the city recorded 20 per cent less rainfall this monsoon season.

For smaller areas like Delhi, 19 per cent more or less than long-period average rainfall (50 years) is considered "normal". Between minus 20 per cent and minus 59 per cent is "deficient", and anything less than that is "scanty".

"Therefore, the overall rainfall which is an average of rainfall measured by all automatic weather stations and rain gauges installed at several places falls in the deficient category this season," Srivastava said.

Earlier this year, the Met department had revised the date for the withdrawal of the monsoon from Delhi from September 21 to September 25.

"The IMD revised the withdrawal date considering the

trend in the last 20-25 years," Srivastava said.

Of all the 11 districts in the national capital, Central Delhi recorded the highest rain deficiency of 63 per cent.

In September, the Safdarjung Observatory -- which provides representative data for the city -- recorded just 20.9 mm rainfall, the lowest for the month in 16 years, according to IMD data. The average rainfall for September is around 129.8 mm.

The last time the weather station recorded any rainfall was on September 8.

According to the IMD, the national capital recorded only three rainy days this September, the lowest since 2016, when it witnessed just two rainy days.

Before this year, the lowest September rainfall was recorded in 2004 (3 mm). Delhi received just 1.6 mm precipitation in September 1994, according to IMD data. Interestingly, the national capital had gauged 237 mm rainfall in August this year, the highest for the month in seven years.

Millennium Post 01-October-2020

# Country received 'above normal' rainfall during four-month monsoon, says IMD

## OUR CORRESPONDENT

**NEW DELHI:** The country received above normal monsoon during the four-month rainfall season for the second consecutive year, recording the third highest precipitation in the last 30 years, the India Meteorological Department (IMD) said on Wednesday.

The country received 109 per cent rainfall of the Long Period Average (LPA) with three of four months -- June (118 per cent), August (127 per cent) and September (104 per cent) -- witnessing above normal rainfall, while July recorded (90 per cent) deficient rainfall.

"Quantitatively, the 2020 monsoon seasonal rainfall during 1 June to 30 September 2020 has been 95.4 centimetres against long period aver-

age of 87.7 cm based on data of 1961-2010 (109 per cent of its LPA)," R K Jenamani, scientist with the IMD's National Weather Forecasting Centre (NWFC) said.

Monsoon in the range of 96-104 per cent of the LPA is considered as 'normal'; 104-110 per cent as 'above normal', above 110 per cent as 'excess'. Rainfall below 90 per cent is considered as 'below normal'.

The monsoon season in India officially starts on June 1 and lasts till September 30.

The southwest monsoon delivers about 70 per cent of the country's annual rainfall, critical for the agriculture sector that accounts for about 14 per cent of India's GDP and employs more than half of the country's 1.3 billion population.

Good rains have boosted

sowing of the kharif crops which farmers have sown in record 1,116.88 lakh hectares till last week as compared to 1,066.06 lakh hectares a year ago, according to the Agriculture Ministry's data.

The IMD has four meteorological divisions. Of the four, the east and northeast India, central India and south India have received above normal rainfall. The northwest India division has recorded deficient rainfall.

Nineteen states and union territories have received normal rainfall this year, while nine states and union territories saw excess rainfall. Bihar, Gujarat, Meghalaya, Goa, Andhra Pradesh, Telangana, Tamil Nadu, Karnataka and Lakshadweep islands have recorded above normal rainfall. Sikkim recorded large excess rainfall.

The Statesman 01-October-2020

# HP records 26 pc deficient monsoon rainfall

STATESMAN NEWS SERVICE  
SHIMLA, 30 SEPTEMBER

Himachal Pradesh has recorded 26 per cent deficient rainfall as per the long period average (LPA) value, which is the lowest in the last 7 years, Shimla Meteorological department director Manmohan Singh said on Wednesday.

Singh said during the 2020 Monsoon season, 567.2 mm was recorded in Himachal Pradesh, which is 26 per cent below the Long Period Average value.

"Out of the twelve districts of the state, 3 districts namely Bilaspur (+9 percent), Kullu (+05 percent), Una (+10 percent) received normal rainfall and the remaining nine districts received deficient rainfall.

Lahaul Spiti district recorded lowest rainfall in the state with the tribal area receiving only 105.5 mm rainfall which was 73 percent less than LPA value, followed by Chamba (-55 percent), Kinnaur (-54 percent), Simla (-37 percent) and Shimla (-29 percent)," he added. Earlier, lowest rainfall of 523 mm (-37) percent was recorded in Himachal in 2014.

Singh said the South-West Monsoon arrived in Himachal 24 June and the Monsoon had withdrawn from the entire state on 30 September, five days late from the normal date of withdrawal of 25 September. Last year, the withdrawal of



People walking during the rain at Ridge in Shimla.

FILE PHOTO / LALIT KUMAR

monsoon from Himachal was recorded on 11 October with the state receiving cumulative rainfall of 685.5 mm which was 10 percent less than the LPA value. He further stated that the state recorded 77 percent less cumulative rainfall in the

month of September at 29.9 mm.

This was the lowest rainfall in the month of September in the last 16 years as the lowest rainfall of -71 percent was recorded in 2004 while the highest rainfall 269.8 mm

(+93%) was recorded in September in 2018.

"There were only 2 spells (4 and 7 September) of monsoon currents in Himachal Pradesh and rest of the month was either dry or received very less rainfall at few places over

the state.

The highest maximum temperature of 38.6 degree Celsius was recorded at Una on 21 September and minimum temperature of 3.3 degree Celsius was recorded in Keylong on 27 September," he added.



Jansatta 01-October-2020

## निर्मल गंगा

**अ**ब गंगा नदी को प्रदूषण मुक्त बनाने की दिशा में किए गए प्रयासों के कुछ सार्थक नतीजे नजर आने शुरू हो सकते हैं। पिछले तीस सालों से अधिक समय से गंगा को निर्मल बनाने की योजना चल रही है, इस पर अरबों रुपए खर्च भी हो चुके हैं, पर गंगा की सेहत दिन पर दिन बिगड़ती ही गई। हालत यह हो गई थी कि इस पवित्र नदी के पानी से आचमन करने वाले लोग भी इसमें डुबकी लगाने से हिचकने लगे थे। फिर राजग सरकार ने इसके लिए अलग से मंत्रालय बनाया और नमामि गंगे योजना के तहत गंगा के निर्मलीकरण पर मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित किया। पिछले करीब छह सालों में इस पर काफी काम किया गया है। दो साल पहले प्रयागराज में आयोजित कुंभ में उसके नतीजे भी नजर आए। शहरों कारखानों का जल-मल सीधे गंगा में मिलने से रोक दिया गया। इसके लिए जल-मल शोधन संयंत्र लगाए गए। अगले साल हरिद्वार में कुंभ लगने वाला है। इसके मद्देनजर प्रधानमंत्री ने हरिद्वार और उसके आसपास की जगहों में लगाए गए शोधन संयंत्रों का उद्घाटन किया। अब कारखानों और शहरी इलाकों का प्रदूषित जल सीधे गंगा में गिरने के बजाय शोधित होकर गिरेगा। इस तरह गंगा के निर्मलीकरण की दिशा में यह एक उल्लेखनीय काम होगा।

करीब तीस साल से प्रयास किया जा रहा था कि शहरों और औद्योगिक क्षेत्रों का गंदा पानी गंगा में गिरने से रोका जाए, मगर तमाम सख्ती के बावजूद कारखाना मालिक नियम-कायदों की अनदेखी करते रहे। औद्योगिक इलाकों और शहरों में जल-मल शोधन संयंत्र लगाए जाने थे, कई जगह लगे भी, मगर उनका संचालन और देखरेख समुचित न हो पाने की वजह से अपेक्षित कामयाबी नहीं मिल पाई। कायदे से औद्योगिक इकाइयों को अपने परिसर में जल शोधन संयंत्र लगाना चाहिए और शोधन के बाद ही अपना पानी नदियों में छोड़ना चाहिए, मगर ज्यादातर कारखाने अपना खर्च बचाने के लोभ में इसका पालन नहीं करते देखे जाते। इनमें बड़े पैमाने पर ऐसे कारखाने हैं, जिनमें चमड़े की सफाई, कपड़े की रंगाई, स्टील के बर्तनों वगैरह की धुलाई आदि के काम होते हैं, जिनसे निकलने वाला पानी विषैला होता है। इसके अलावा कई रासायनिक वस्तुएं बनाने वाले कारखाने भी अपना जहरीला पानी नदियों में छोड़ देते हैं। गंगा के रास्ते में पड़ने वाले शहरों में ऐसे कारखाने बड़ी संख्या में हैं। उनका गंदा और जहरीला पानी गंगा में मिल कर उसे प्रदूषित करता रहता है। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की तमाम सख्तियों के बावजूद इस प्रवृत्ति पर अंकुश नहीं लग पाया है।

गंगा को प्रदूषण मुक्त करने के लिए सरकारी स्तर पर शोधन संयंत्र लगाने से निस्संदेह काफी हद तक कामयाबी मिलेगी, पर इस दिशा में औद्योगिक इकाइयों को भी जवाबदेह बनाना जरूरी है। कारखानों का विषैला पानी न सिर्फ गंगा में गंदगी बढ़ाता है और उसके जल-जीवों के जीवन को खतरे में डालता है, बल्कि इस नदी के किनारे बसे गांवों के जीवन और कृषि पर भी बहुत बुरा असर डालता है। हालांकि प्रधानमंत्री ने गंगा के किनारे बसे गांवों और शहरों को ध्यान में रखते हुए नमामि गंगे योजना को विस्तार दिया है, पर इस दिशा में सतत प्रयास की आवश्यकता है। जल-मल शोधन संयंत्रों की एक उम्र होती है और उचित देखभाल न होने से उनके समय से पहले भी बैठ जाने का खतरा रहता है। मसलन, हरिद्वार की परियोजनाएं पंद्रह साल की अवधि को ध्यान में रख कर लगाई गई हैं। इसलिए गंगा निर्मलीकरण के लिए सतत और समग्र प्रयास होते रहना चाहिए।

Rajasthan Patrika 01-October-2020

**मौसम:** भारतीय मौसम विभाग ने की घोषणा

## अगले दो-तीन दिन में पूरे प्रदेश से हो जाएगी मानसून की विदाई



**जोधपुर.** निम्न स्तर पर उत्तरी-पश्चिमी हवाएं बहने, नमी कम होने, बरसात की गतिविधियों में कमी आने के बाद भारतीय मौसम विभाग ने बुधवार को जोधपुर सहित करीब आधे राजस्थान से मानसून के लौटने की घोषणा कर दी। मानसून की विड्रॉल लाइन बाड़मेर के कुछ हिस्सों से नागौर होते हुए लेकर अलवर तक जा रही है। अगले दो-तीन दिन में प्रदेश के समस्त हिस्से से मानसून की विदाई संभव है। राजस्थान के अलावा पंजाब, हरियाणा, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, हिमालय का पश्चिमी हिस्सा और उत्तरप्रदेश व उत्तराखण्ड के पश्चिमी हिस्से से भी मानसून हट गया है। उधर मारवाड़ में बुधवार को तापमान में उतार चढ़ाव के साथ दिनभर धूप खिली रही। जोधपुर में न्यूनतम तापमान 25 डिग्री रहा।



Rajasthan Patrika 01-October-2020



## बांध की पाल पर बढ़ी चहल-पहल, नहीं है सुरक्षा के प्रबंध

उदयपुर . जिले के वल्लभनगर स्थित सरजणा बांध पर आधा इंच की चादर चल पड़ी है। ऑवरफ्लो का पानी बेड़च नदी में होता हुआ आगे बडगांव बांध में जा रहा है। पाल पर लोगों की चहल-पहल बढ़ गई है, लेकिन सुरक्षा के कोई खास प्रबंध नहीं हुए हैं। सिंचाई विभाग की चेतावनी के बाद भी कई लोग बांध की रपट पर चलते फिरते सेल्फी लेते नजर आ रहे हैं। बांध की भराव क्षमता 20 फीट है, लेकिन यह 19 फीट 7 इंच होने पर चादर चलने लग जाती है।

Punjab Kesari 01-October-2020

# मानसून ने ली विदाई, सामान्य से 26 प्रतिशत कम हुई बारिश

6 वर्षों में सबसे कम बारिश, 10 जिलों में ढीला रहा मानसून

शिमला/पालमपुर, 30 सितम्बर (राजेश/भृगु): हिमाचल से दक्षिणी-पश्चिमी मानसून ने विदाई ले ली है। मौसम विज्ञान केंद्र शिमला ने बुधवार को इसकी आधिकारिक घोषणा की है। विभाग के अनुसार पिछले 6 सालों में पहली बार प्रदेश में मानसून की कम बारिश हुई है।

मौसम विभाग की ओर से दी गई जानकारी के अनुसार इस बार प्रदेश में मानसून की सामान्य से 26 प्रतिशत कम बारिश हुई है। मानसून इस बार अपनी निर्धारित तिथि से 5 दिन देरी से विदा हुआ है। मानसून ने 24 जून को प्रदेश में दस्तक दी थी। मौसम विभाग

के निदेशक मनमोहन सिंह ने बताया कि मानसून सीजन के दौरान हिमाचल में 567 मिलीमीटर बारिश हुई है जबकि इस अवधि के दौरान 763 मिलीमीटर बारिश होनी चाहिए थी। इस तरह मानसून सामान्य से 26 फीसदी कम बरसा है। उन्होंने कहा कि बीते 6 साल में मानसून सबसे कम बरसा है।

निदेशक मनमोहन सिंह ने बताया कि प्रदेश में इस बार मानसून 3 माह 5 दिन रहा। आम तौर पर प्रदेश से मानसून 25 सितम्बर के आसपास विदा हो जाता है। इस साल मानसून 5 दिन देरी से विदा हुआ है। पिछले साल मानसून की विदाई 11 अक्टूबर

## मानसून सीजन में कांगड़ा जिला में सबसे अधिक 1218 मि.मी. बारिश

विभाग के अनुसार पूरे मानसून सीजन में कांगड़ा जिला में सबसे ज्यादा 1218 मि.मी. और लाहौल-स्पीति में सबसे कम 105 मि.मी. बारिश रिकॉर्ड हुई है। हालांकि बिलासपुर जिला में सामान्य से 9 फीसदी और कुल्लू में सामान्य से 5 प्रतिशत अधिक बारिश हुई है। मनमोहन सिंह ने कहा कि लाहौल-स्पीति जिला में सामान्य से 73 फीसदी कम बारिश हुई जबकि पम्वा में सामान्य से 55 फीसदी कम, हमीरपुर में 20 प्रतिशत कम, कांगड़ा में 24 प्रतिशत कम, किन्नौर में 54 प्रतिशत कम, लाहौल-स्पीति में 73 प्रतिशत कम, मंडी में 23 प्रतिशत कम, शिमला में 29 प्रतिशत कम, स्त्रिमौर में 37 प्रतिशत कम, सोलन में 21 प्रतिशत कम और ऊना में 10 फीसदी कम बारिश रही।

को रिकॉर्ड देरी से हुई थी।

उन्होंने कहा कि बिलासपुर और कुल्लू जिलों को छोड़कर प्रदेश में इस बार मानसून की कम बारिश हुई है।

सितम्बर के महीने में मानसून की रफ्तार बेहद धीमी रही और मात्र 29 मि.मी. बारिश दर्ज की गई जो सामान्य से 77 फीसदी कम है।

## 2014 के बाद पहली बार सामान्य से कम बारिश

वर्ष 2014 के बाद यह पहला मौका है जब मानसून की सामान्य से काफी कम बारिश दर्ज हुई है। वर्ष 2019 में प्रदेश में सामान्य से 10 फीसदी कम बरसात हुई थी जबकि वर्ष 2016 में सामान्य से 24 फीसदी कम बारिश रिकॉर्ड हुई थी। वर्ष 2014 में मानसून सामान्य से 37 प्रतिशत कम बरस कर विदा हुआ था।



Haribhoomi 01-October-2020

# दिल्ली से मानसून की वापसी, 20 प्रतिशत कम हुई बारिश

हरिभूमि न्यूज ►► नई दिल्ली

दिल्ली से बुधवार को मानसून की वापसी हो गई और इस मौसम में शहर में 20 प्रतिशत कम बारिश हुई है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने यह जानकारी दी।

विभाग के क्षेत्रीय पूर्वानुमान केंद्र के प्रमुख कुलदीप श्रीवास्तव ने बताया कि यह सामान्य से दो दिन पहले 25 जून को राष्ट्रीय राजधानी में पहुंच गया था और सामान्य से पांच दिन अधिक रहा। यह 25 सितम्बर तक राजधानी से वापसी कर जाता है। विभाग ने बताया कि उत्तर-पश्चिम हवा के निम्न स्तर में बदलाव, नमी की मात्रा में कमी, बारिश नहीं होने से

ऐसे संकेत हैं कि दक्षिणपश्चिम मानसून राजस्थान के और कुछ भागों, पंजाब के शेष हिस्सों, पूरे पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली और उत्तर प्रदेश के कुछ भागों से वापसी कर गया है। विभाग के आंकड़ों के अनुसार मानसून के इस मौसम में शहर में 20 प्रतिशत कम बारिश हुई है। दिल्ली जैसे छोटे क्षेत्रों के लिए, लंबी अवधि की औसत वर्षा (50 वर्ष) की तुलना में 19 प्रतिशत अधिक या कम 'सामान्य' माना जाती है। सफदरजंग वेधशाला ने पूरे सीजन के दौरान 648.9 मिमी के सामान्य के मुकाबले 576.5 मिमी वर्षा दर्ज की जो 11 प्रतिशत कम है।